

प्रभात मंत्र

संपादकीय

इच्छा शक्ति का प्रमाणपत्र

सरका की इच्छाकृति का जोरदार प्रदर्शन कांगड़ा हवाई अड्डा के विस्तार के साथ नथी हो गया है और एक बार फिर इस आशय का प्रमाणपत्र मुख्यमंत्री सुखविंदर सुकून ने दिया है। कांगड़ा एयरपोर्ट अब सियासी विसात से कहीं आगे हकीकत की जमीन पर राज्य के भविष्य को नई आवाज दे रहा है। बुधवार के वर्चुअल संवेधन में शाहपुर से पालमपुर तक के संदेश में विकास का एक नया नक्शा मुख्यातिव रहा, तो द्वोन तकनीक के क्षेत्र में हुआ शंखनाद परिवर्तन की दिशा में अग्रसर होने का रास्ता चुन रहा है। बहराहल बुधवार के कार्यक्रमों में मुख्यमंत्री की वर्चुअल उपस्थिति में हिमाचल के विकास की मजबूरी भी परिलक्षित हुई है या यूं कहें कि सरकार के इरादों का जोश अंततः कैनैक्टिविटी की बाधाओं में विभाजित हो जाता है। ऐसे में बड़े हवाई अड्डे का खाव पिछले दो दशकों से झूलता रहा है। जमीनों की पैमाइश से कहीं अधिक नाप नपाई गजनीति

न-एने प्रस्ताव क नामां पश करके समय और सपनों को बांटा गया, लेकिन यह पहली सरकार है जो पहले दिन से इस कोशिश में है कि कांगड़ा हवाई अड्डे को सियासी मुकदमा बनाने के बजाय पर्यटन की मंजिल पर खड़ा किया जाए। इसी बहाने विकास और विस्थापन की नई चर्चा हिमाचल में शुरू हुई है। यह फोरलेन परियोजनाओं से होती हुई कांगड़ा एयरपोर्ट के प्रवेश पर खड़ी है और इसी संदर्भ में मुख्यमंत्री का यह आश्वासन आया है कि विस्थापित परिवारों को सरकार पूरी तरह से बसाएगी। विकास में विस्थापन मायूस जरूर करता है, लेकिन इसे योजनाबद्ध तरीके से अवसर में बदला जाए तो भविष्य के पैमाने, रोजगार की संभावना और जीवनशैली की पढ़दि प्रभावशाली हो जाएगी। दरअसल विस्थापन में

जाएगा। दरअसल हमाचल में अबतक मुआवजा राशि और पुनर्वास का स्थायी प्रबंधन करने में नीतिगत चूक होती रही है। अगर पौंग बांध परियोजना के बदले एक सैटेलाइट एवं औद्योगिक शहर की बुनियाद रखी गई होती तो देहरा से नूरपुर के बीच बीबीएन या परवाणू जैसा शहर बस जाता। कहना न होगा कि कांगड़ा एयरपोर्ट विस्तार के संकल्प के साथ न्यू गगल के विकास का मंसूबा परिलक्षित होना चाहिए ताकि आवास के बदले आवास और व्यापार के बदले व्यापार मिल सके। प्रदेश अगर एक मुकम्मल पुनर्वास नीति बनाए, तो यह भविष्य के शहरों, निवेश केंद्रों और आर्थिक संभावनाओं का एक खुशाहाल परिवृश्य खड़ा कर सकती है। प्रदेश की चार महत्वपूर्ण फोरलेन परियोजनाओं और प्रमुख नेशनल हाई-वे के साथ-साथ कम से कम आधा दर्जन निवेश या पुनर्वास शहर बसा कर सरकार विस्थापितों को दर्द भुलाने का विकल्प दे सकती है। इसकी शुरुआत गगल एयरपोर्ट विस्तार से हो सकती है। यह कांगड़ा-धर्मशाला के बीच एक नया व्यापारिक, औद्योगिक केंद्र के साथ-साथ आवासीय बस्ती के निरूपण से संभव होगा। हिमाचल में हाईवे ट्रॉफ्रज की संभावनाओं में तमाम विस्थापित लोगों को रोजगार देना होगा। हिमाचल में कश्मीरी व तिब्बती शरणार्थियों के लिए सरकारी नौकरियों में अवसर आरक्षित हो सकते हैं, तो आइंदा किसी भी प्रकार के विस्थापन के बदले प्रभावित परिवारों को सरकारी नौकरियों में आरक्षण मिलना चाहिए। बहरहाल सुख्ख्य सरकार ने विकास के मानदंड बदले हैं और इरादों में इच्छाशक्ति का परिचय देना शुरू किया है, लेकिन मंजिले समयबद्ध रणनीति और इसकी पूर्णतः से ही तय होंगी। जाहिर तौर पर कांगड़ा एयरपोर्ट अगर एक तपके को विस्थापन की वजह से निराश कर रहा है, तो कहीं यह परियोजना हिमाचली विकास की सदियां भी बदल देगी। अब कोशिश हिमाचल की दूरियां मिटाकर अनावश्यक खर्च घटाने की होनी चाहिए। दो तीन शहरों और दर्जनों कस्बों-गांवों को मिलाकर विकास के केंद्रीयकरण को राहत देकर इसे हर छोर की सहभागिता में परिपूर्ण करना होगा। इस दृष्टि से नगर नियोजन की अवधारणा को व्यापक परिवृश्य में देखना होगा तथा क्षेत्रीय विकास प्राधिकरणों की स्थापना में आगे बढ़ना पड़ेगा।

ਕੁਛ ਅਲਗ

अपना-अपना एनसापा

यह बहुत बड़ा राजनीतिक उलटफर है। यहां खानदान पाटी का नियंत्रित है। समाजवादी पार्टी और शिवसेना में यह उलटफर हो चुका है। यह कुनबे के दूसरे सदस्यों की महत्वाकांक्षा है। एक ही परिवार या एक ही बुजुर्ग की अनंत कुंडली अब स्वीकार्य नहीं है। खानदान के दूसरे चेहरे भी अपनी सियासी पारी खेलना चाहते हैं। मुख्यमंत्री भी बनना चाहते हैं। बेशक शिवसेना में कुछ अलग घटित हुआ। वहां बाल ठाकरे के शिव सैनिकों ने बगावत की और दिवंगत पार्टी प्रमुख के 'राजकुमार' को नकार दिया। चुनाव आयोग ने भी पार्टी का नाम और निशान शिव सैनिकों को आवंटित कर उन्हें 'असली शिवसेना' की मान्यता दी। मामला फिलहाल सर्वोच्च अदालत में है। इसी तर्ज पर 'राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी' (एनसीपी) में हुआ है। एनसीपी की रीब 24 साल तक शरद पवार की थी, क्योंकि वह पार्टी के संस्थापक अध्यक्ष रहे। अब उन्हीं के सभे भर्तीजे एवं राजनीतिक शिष्य अजित पवार ने पार्टी छीन ली और खुद को एनसीपी का नया राष्ट्रीय अध्यक्ष घोषित कर दिया। उसके बाद ही भाजपा से गठबंधन किया और शिंदे सरकार में शामिल हो गए। गठबंधन पार्टी के स्तर पर हुआ है, लिहाजा अब एनसीपी एनडीए का घटक दल है। चुनाव आयोग से मान्यता के लिए अजित गुट ने याचिका दी है। उधर शरद पवार गुट ने उन 9 विधायकों को पार्टी से बर्खास्त किया है, जिन्होंने बीती 2 जून को मंत्री पद की शपथ ली थी। चुनाव आयोग को उन विधायकों को 'अयोग्य' करार देने की भी अर्जी दी गई है। अब संघर्ष 'अपनी-अपनी एनसीपी' का है। दोनों गुटों ने विधायकों, सांसदों, नेताओं की जो अलग-अलग बैठक बुलाई थी, उनमें बहुमत अजित के पक्ष में है। अजित गुट में 31 विधायकों ने हलफनामे पर हस्ताक्षर किए हैं, जबकि दावा यह है कि 42 विधायकों ने हलफनामा भर कर अजित को समर्थन दिया है। अब महत्वपूर्ण यह नहीं है कि कौन शरद पवार का कितना करीबी था? नैतिकता और निष्ठा कहां गई? क्या शरद को यथासमय रिटायर होकर नया अध्यक्ष चुनना चाहिए था? क्या बीटी सुप्रिया सुले को 'कार्यकारी अध्यक्ष' बनाने का फैसला भी खानदानी था? यदि अजित को अध्यक्ष बनाया जाता, तो वह भी खानदान की नई पीढ़ी होते।

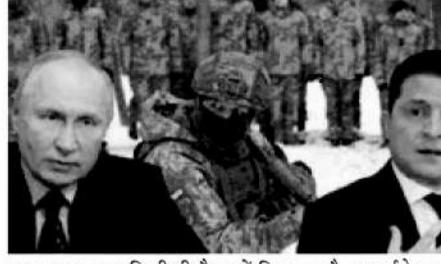
भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पुतिन से फोन पर बातचीत कर एक बार फिर से यूकेन युद्ध को समाप्त करने की अपील की

अर्थव्यवस्थाओं पर बहुत गहरा असर डाल रहा रूस यूक्रेन युद्ध !

सुनील कुमार महला

भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा है कि आपसी बातचीत और कूटनीति के जरिए इस मामले का हाल निकालने की कोशिश की जानी चाहिए। पुतिन ने प्रधानमंत्री की सलाह को गंभीरता से सुना है, लेकिन यूके पर यह आरोप लगाया कि वह रूस की बातचीत और कूटनीति से साफ़ इनकार करता है। यह पहली बार नहीं है जब भारत के प्रधानमंत्री ने युद्ध विराम को लेकर ऐसी अपील की है। इससे पहले भी प्रधानमंत्री इस मामले को जल्द से जल्द सुलझाने की अपील की थी। जानकारी देना चाहिए कि शंघाई सहयोग संगठन के शिखर सम्मेलन में पुतिन से आमने-सामने मिल कर उन्होंने पुतिन को जंग खत्तर करने की सलाह दी थी। तब पुतिन ने भारत के प्रधानमंत्री को यह विश्वास किया दिलाया था कि वे उनकी बातों पर जरूर अमल करेंगे, लेकिन वापस लौटते ही उन्होंने यूके पर हमले तेज़ कर दिए थे।

24 फरवरी 2022 का शुरू हआ रूस यूक्रेन युद्ध थमन का नाम नहीं ले रहा है और इस युद्ध को चलते हुए सब साल से भी अधिक का समय हो गया है। दोनों ही देशों में कोई भी देश युद्ध में पांछे हटने को तैयार नहीं है और लगातार युद्ध जारी है। इसी बीच, भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पुतिन से फोन पर बातचीत कर एक बार फिर से यूक्रेन युद्ध को समाप्त करने की आपील की है। भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा है कि आपसी बातचीत और कूटनीति के जरिए इस मामले का हल निकालने की कोशिश की जानी चाहिए। पुतिन ने प्रधानमंत्री की सलाह को गंभीरता से सुना है, लेकिन यूक्रेन पर यह आरोप लगाया कि वह रूस से बातचीत और कूटनीति से साफ़ इनकार करता है। यह पहली बार नहीं है जब भारत के प्रधानमंत्री ने युद्ध विराम को लेकर ऐसी आपील की है। इससे पहले भी प्रधानमंत्री इस मामले को जल्द सुलझाने की आपील की थी। जानकारी देना चाहूंगा कि शंखाई सहयोग संगठन के शिखर सम्मेलन में पुतिन से आमने-सामने मिल कर उड़ोने पुतिन को जंग खत्म करने की सलाह दी थी। तब पुतिन ने भारत के प्रधानमंत्री को यह विश्वास दिलाया था कि वे उनकी बातों पर जरूर अमल करेंगे, लेकिन वापस लौटते ही उड़ोने यूक्रेन पर हमले तेज़ कर दिए थे। पाठकों को बता दूँ कि रूस यूक्रेन युद्ध से विश्व युद्ध के बाद से यूरोप में सबसे गंभीर मानवीय संकटों में से एक को जन्म दिया है। रूस यूक्रेन युद्ध से न केवल दोनों देशों की अर्थव्यवस्थाओं पर बल्कि संरूप विश्व की अर्थव्यवस्थाओं पर बहुत ही गहरा प्रभाव पड़ रहा है। दोनों देशों के बीच युद्ध से विश्व में गरीबी और भूख में इजाफा हुआ है। खाद्य कीमतों में अभूतपूर्व उछाल आया है और यही कारण है कि विश्व में अनेक देशों में लोग गरीबी रेखा से नीचे आ गए हैं। बताया जा रहा है कि यदि दोनों देशों के बीच युद्ध और भी अधिक लंबे समय तक जारी रहता है तो इससे उच्च-सहारा अफ्रीका और लैटिन अमेरिका से लेकर काकेशस और मध्य एशिया तक कुछ क्षेत्रों में अशांति का अधिक खतरा पैदा हो सकता है, जबकि अफ्रीका और मध्य पूर्व के कुछ हिस्सों में खाद्य असुरक्षा की ओर बढ़ने की संभावना है। रूस यूक्रेन युद्ध से आज तेल और प्राकृतिक गैस की कीमतों में वृद्धि देखने की मिली है। दोनों ही देश प्रमुख वस्तु उत्पादक हैं, युद्ध से बाजार में उछाल आया है। कमेडी व्यापार पर खास प्रभाव युद्ध से पड़ा है। युद्ध के कारण विभिन्न सेवाएं और यात्राएं भी बाधित हुई हैं। यदि रूस यूक्रेन युद्ध जारी रहता है तो इससे भारत पर भी



प्रधान पड़ना लाजिमी ही है, क्यों कि रूस सैन्य हार्डवेर का भारत का सबसे बड़ा और विश्वसनीय आपूर्तिकर्ता है। यह रूस के कारण है कि एस-400 वायु रक्षा प्रणाली ने चीन के खिलाफ भारत की रक्षा क्षमता को बढ़ाया है। मास्को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत का एक विश्वसनीय सहयोगी भी है। इन्होंने ही नहीं, परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण उपयोग के क्षेत्र में रूस भारत का एक महत्वपूर्ण भागीदार है। वास्तव में दोनों देशों को यह चाहिए कि वे युद्ध का समाधान करने की दिशा में अपने कदम आगे बढ़ाएं। क्यों कि युद्ध किसी भी समस्या का स्थाई समाधान नहीं होता है। आज यूक्रेन लगभग लगभग पूरी तरह बर्बाद हो चुका है। रूस को भी नुकसान पहुंचा है। दोनों ही देशों में संपत्ति, धन व जानने का काफी नुकसान हुआ है। युद्ध से दोनों ही देशों की अर्थव्यवस्थाओं पर बहुत बुरा असर पड़ा है। सच तो यह है कि अब दोनों ही देशों के बीच वातां को फिर से शुरू करने का समय है। मध्यस्थता की दिशा में पहल करने के लिए भारत के पास सुनहरा अवसर है। भारत लगातार बातचीत और कूटनीति को एकमात्र समाधान के रूप में रखता आया है, क्यों कि भारत हमेशा हमेशा से पंचशील के सिद्धांतों में विश्वास करता आया है। यहां यह भी जानकारी देना चाहूंगा कि संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता के लिए आपसी सम्मान, आपसी गैर-आक्रमकता, एक-दूसरे के आंतरिक मामलों में गैर-हस्तक्षेप, समानता और पारस्परिक लाभ, और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व पंचशील संधि के पांच सिद्धांत हैं। बहहाल, दुनिया के तमाम देश भारत की तरफ नजरें लगाए हुए हैं कि अगर वह मध्यस्थता करे तो रूस- यूक्रेन युद्ध रुक सकता है। रूस तो वैसे भी भारत का एक मित्र देश रहा है और जहां तक यूक्रेन की बात है तो बताता चलूँकि युद्ध विश्वास के सिलसिले में भारत के प्रधानमंत्री ने यूक्रेन के राष्ट्रपति बोलोदिमीर जैलेस्की से भी बातचीत की थी। बातचीत के बाद में अमेरिका ने यूक्रेन को देने का बादा भी किया है। पश्चिमी देश लगातार यूक्रेन की मदद कर रहे हैं। जानकारी देना चाहूंगा कि जनवरी में अमेरिका और ब्रिटेन ने यूक्रेन को चैलेंजर 2 टैक और जर्मनी ने अपने लेपेड टैक देने का बादा किया। युद्ध की शुरुआत से यूक्रेन के सहयोगी उसे हर महीने दो अरब डॉलर की लगत वेर्बल हथियार और दूसरी सैनिक सहायता देते रहे हैं। एक आंकड़े के अनुसार अमेरिका यूक्रेन को पच्चीस अरब डॉलर से अधिक की मदद दे रुका है रूस चाहता है कि यूक्रेन नाटो की सदस्यता न ले, मगर यूक्रेन नाटो की सदस्यता में ही स्वयं को सुरक्षित मान रहा है। नाटो से जुड़े पश्चिमी देश यूक्रेन के समर्थन में हैं, जबकि रूस इन सभी के खिलाफ है। जानकारी देना चाहूंगा कि रूस के चीन का समर्थन हासिल है, जो अमेरिका, फ्रांस, जर्मनी, ब्रिटेन के वर्चस्व को चुनौती देता रहता है। इस तरह रूस- यूक्रेन युद्ध में दुनिया आज दो भ्रूँओं में बट्टगई है और दुनिया पर तीसरे विश्व युद्ध का खतरा जैसे मंडराने लगा है। रूस यूक्रेन युद्ध के कारण आज महांगाई में इजाफा हो गया है, संपूर्ण विश्व की आरूपि भी कहीं न कहीं बाधित हुई प्रतीत हुई है। आज कोई भी देश रूस यूक्रेन युद्ध संघर्ष में खुलकर सामन नहीं आ रहा है लेकिन पश्चिमी देश यूक्रेन को और विश्व के अन्य देश रूस को सोपांट कर रहे हैं। रूस यूक्रेन युद्ध से पर्यावरण पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। यूक्रेन अनाज उत्पादन के मामले में विश्व की एक टोकरी कहलाता है लेकिन युद्ध से भ्रूमि के उपजाऊपन व पर्यावरण पर विशेष असर तो पड़ा ही है। भारत के रूस और यूक्रेन दोनों से अच्छे संवधान हैं और अमेरिका ब्रिटेन से भी। वर्तमान रिस्टियों में विभिन्न पश्चिमी देश चाहते हैं कि भारत रूस यूक्रेन के बीच मध्यस्थता करे। इस बक्त भारत रस्मू-बीस की अध्यक्षता कर रहा है। इसीलिए भी उसका इस समूह के देशों पर दबाव बना कर युद्ध के विराम देने का दायित्व बढ़ गया है।

विपक्षी एकता के प्रयासों का धर्मका न्द्र

अभी स्याही भी सूखी नहीं थी कि एकता के केन्द्र में योजना पर्वक बिताए गए राजनीति के चतुर खिलाड़ी

कन्ध म थाजना पूवक बठाए गए, रजनात क चतुर खला डा
83 वर्षीय शरद पवार के घर में स्याही की दवात ही टूट गई
और सारी स्याही इब्बरत के पन्नों पर बिखर गई। अब पटना
की इब्बरत साफ-साक पढ़ी नहीं जा रही। शरद पवार ने कई
दशक पहले राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी, जिसे अंग्रेजी में एनसीपी
कहा गया, बनाई थी। तब उनका मानना था कि भारतीय
राष्ट्रीय कांग्रेस अब राष्ट्रीय नहीं रह गई है क्योंकि उसने
अपनी रस्सी सोनिया गांधी के हाथों में दे दी है जो विदेशी मूल
की है। कांग्रेस राष्ट्रीय रहे, इसलिए उन्होंने अपनी राष्ट्रवादी
कांग्रेस बना ली। देश में तो नहीं, लेकिन अपने प्रदेश की
राजनीति में उन्होंने जरूर अपनी पार्टी के लिए जगह बना ली
और सोनिया गांधी कांग्रेस को कुछ हलकों तक सीमित कर
दिया। लेकिन पिछले विधानसभा चुनावों में उन्होंने महाराष्ट्र
में सत्ता के लिए सोनिया जी की कांग्रेस के साथ मिल कर
महाराष्ट्र विकास अगाड़ी बना ली और उसमें शिव सेना को भी
शामिल कर लिया। लेकिन बढ़ती उम्र के कारण वे अपनी
पार्टी अपने परिवार वालों के हवाले कर शायद सुख की नींद
लेना चाहते थे। सुख की नींद का मतलब यह नहीं कि
राजनीति छोड़ने की योजना बना रहे थे। बस इतना ही कि
महाराष्ट्र में पार्टी अपने उत्तराधिकारी को सौंप कर स्वयं
दिल्ली की राजनीति में हाथ आजमा ले। छोटी-बड़ी विपक्षी
पार्टियां यदि मिल जाएं तो हो सकता है भारतीय जनता पार्टी
को बहुमत न मिले और जोड़-तोड़ की राजनीति में शरद
पवार के हाथ भी कोई मोटी चीज लग जाए। इसलिए वह
बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश बाबू को आगे करके अपने मोहरे
चलाने लगे। जहां तक उनकी पार्टी एनसीपी का सवाल था तो
परिवार में उसके दो सशक्त उत्तराधिकारी थे। एक उनके
भतीजे अंजीत पवार और दूसरी उनकी पुत्री सुप्रिया सुले। कहा
जाता है कि पार्टी को बनाना में शरद पवार के साथ उनके इस
भतीजे ने ही लम्बे अरसे तक भागदौड़ की थी। लेकिन जब
विधिवत उत्तराधिकारी नियुक्त करने की बात आई तो शरद
पवार ने भतीजे को नहीं बल्कि पुत्री को ही अधिमान दिया।
परिवार की राजनीतिक धन-सम्पत्ति परिवार में बांट कर शरद
पवार तो पटना वाला खेल खेलने में मशगूल हो गए और इधर
उनके भतीजे के धैर्य का अन्त हो गया। 288 सदस्यों वाली
महाराष्ट्र विधानसभा में शरद पवार की पार्टी के 53 सदस्य
हैं। अंजीत पवार उनमें से चालीस सदस्य ले उड़े और भाजपा
के साथ मिल ही नहीं गए, बल्कि अपने आठ सहयोगियों
सहित मंत्री भी बन गए। उसके बाद शरद पवार का साथ
छोड़ने वालों की रुक-रुक कर खबरें आने लगीं। चाचा-
भतीजा ने प्रकृत-प्रसेर को पार्टी से निकाल देने का कार्यक्रम भी

जाएंगे तो उनकी इन पतलों का बहां कौन खरीदार मिलेगा ? मिल भी गया तो औने पैने दाम में ही खरीदेगा । जो शरद पवार कभी सोनिया गांधी और राहुल गांधी को हौसला देते थे कि हम आपके साथ हैं, उनके राहुल गांधी और सोनिया गांधी का फोन आया कि उम्र की इस चौथ में धैर्य मत छोड़ना, हम आपके साथ हैं । उस सोनिया गांधी का जो अभी भी है तो विदेशी मूल की हीं । शरद पवार ने ये दिन भी देखने थे ? यदि पटना-पटना खेला न खेलते तो शायद कोई उनकी ओर ध्यान ही न देता और वे चुपचाप अपनी राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी की सफाई करते रहते । लेकिन जब कोई मधुमक्खियों के छते के नाटक में स्वयं के लिए 'रानी मक्खी' की भूमिका तय कराया तो उसे इसके खतरों का भी पता होना चाहिए था । यह समझ से परे है कि इन्हें समझदार शरद पवार इतनी राजनीतिक नासमझी कैसे कर बैठे ? विपक्षी पार्टियों के लिए यह 'प्रथम ग्रास मक्षिका' वाला प्रसग है । बाकी पार्टियों में भी हो हल्ला होने लगा है । सबसे ज्यादा हलचल तो नीतीश बाबू की जेडीयू में है । पटना वाला खेला में नीतीश बाबू ही लालू यादव जी के बेटे तेजस्वी यादव के साथ मिल कर उत्साह से लबरेज थे । बिहार विधानसभा में कुल 243 सीटें हैं । इनमें से भाजपा और लालू प्रसाद यादव के राष्ट्रीय जनता दल के पास 80-80 विधायक हैं । नीतीश कुमार की जेडीयू के पास 45 और सोनिया कांग्रेस के पास 19 विधायक हैं । इसी नीतीश कुमार की राजनीतिक दक्षता ही कहना पड़ेगा कि वे 45 के बावजूद मुख्यमंत्री बने हुए हैं । शायद इसी के कारण नीतीश बाबू को लगा होगा कि राजनीति तो उनकी हथेली पर नाचती है । इसी के कारण उन्होंने शरद पवार के साथ मिल कर एक ऊंची उड़ान भरने की योजना बना ली होगी । शरद पवार के राजनीतिक पंख तो अब आकर उनके भतीजे ने काटे, लेकिन नीतीश कुमार तो कटे पंखों के साथ ही सुपरमैन की बर्दी पहन कर लम्बी उड़ान की तैयारियां कर रहे थे । लेकिन उनके छते की मधुमक्खियों के लगाने लगा कि हमारी यह रानी मक्खी खुद भी गिरेगी और हमें भी कहीं का नहीं छोड़ेगी । लालू की सन्तानें छते का शहद निकालने के लिए बर्तन लेकर धूम रहे हैं । अब खबरें आ रही हैं कि नीतीश बाबू के छते में भी हलचल मची हुई है । वैसे तो विपक्ष को भयभीत कर देने वाली खबरें कर्नाटक से भी आनी शुरू हो गई हैं । फिलहाल पश्चिमी बंगाल में स्थानीय निकाय चुनावों के परिणाम की प्रतीक्षा करनी होगी । ममता की रणनीति तभी पता चलेगी । इस तरह विपक्ष एक जुट होने के प्रयास जरूर करता है, लेकिन साथ ही वह टूटूता जाता है । विपक्ष में एकता नजर नहीं आ रही है । इसका लाभ भाजपा तथा मोदी को ही मिलेगा । फिलहाल भजपा लाभ की स्थिति

— 8 —

ਹਾਯ ਰੇ ਲਾਲ ਟਮਾਟਰ!

घर की काम वाली बाई ने बताया कि

म टमाटर बास रुपए किलो बिक रहा है तो मुंह में पानी आ गया, क्योंकि पिछले पंद्रह दिनों से सलाद में टमाटर गायब था। मैंने बच्चे से कहा - 'यार टिंकू, गाड़ी निकाल, मंडी से टमाटर लाएंगे।' वह बोला - 'पापा, टमाटर में गाड़ी क्या करेंगी? अपनी स्कूटी ले जाओ और ले आओ टमाटर। कोई गाड़ी भरकर टमाटर थोड़े ही लाना है। एक थैले में आ जाएगा टमाटर।' मैं बोला - 'तुम समझता नहीं, अस्सी रुपए किलो का टमाटर है।' मंडी में थीड़-भाड़ रहती है। थैला हाथ से छूट गया या गय ने सींग मार दिया तो टमाटर खरीदना, नहीं खरीदना बराबर हो जाएगा।' मन मारकर वह तैयार हो गया। मंडी पहुंचे तो एक सब्जी विक्रेता के पास सड़ा-गला सा टमाटरों का ढेर देखा गया, वही टमाटर सलादी और रसदार लगा। मैंने भाव पूछा तो विक्रेता ने बताया कि टमाटर पचास रुपए लगा दे गे। मैंने मन में सोचा - चलो तीस रुपए किलो का फायदा है। सब्जी और सलाद के लिए यह बुरा नहीं है। बच्चा मेरी बात समझ

नाक बंद कर ली और बोली- 'क्या लाए हो, जिससे दिमाग तक सङ्ग आया है।' बच्चे ने ही जवाब दिया- 'सङ्ग हुआ टमाटर।' पत्नी ने थैला खोला तो दुर्घट्नाओं और फैली और वह बोली- 'इससे तकाल बाहर कहेंदान में डालो, वरना सारा घर बीमार हो जाएगा।' मैंने कहा थी- 'भागवान यह क्या कर रही हो? पचास रुपए किलो का है। पूरी मंडी छान मारी, एक दुकानदार के यहां ही था। वह ले आया। अब इसे सब्जी में काम ले लो।' पत्नी गुस्से में भुजुनायी- 'आप का तो दिमाग सङ्ग आया है। नाक में प्राण शक्ति रही नहीं और ले आया यह सङ्ग-गला।' यह कहकर उसने पूरा थैला बाहर कहेंदान में उंडेल दिया और राहत की सांस ली और मैंने लम्बी सांस लेकर यही कहा- 'हाय रे मेरे लाल टमाटर।' टिकू लगतार हँसे जा रहा था। मैंने कहा- 'अब देखता हूँ क्या खाओगे सलाद में?' उसने कहा- 'हम बिना सलाद के खा लेंगे, लेकिन उफ! आपके इस सङ्ग टमाटर से तो बचे।' मैं गुस्से में ऑफिस जाने के तैयारी में जुट गया, बाहर से टमाटरों की गंध अभी भी

दर्या दुनिया संग्रह

विद्यारथ्या का सहत आर शिक्षण संस्थान

५८

व फिटनेस पर कानून हुआ है, मगर उतना नहीं जससे सपूण स्वास्थ्य मिल सके। हमारे देश के पहली कक्षा से लेकर विश्वविद्यालय तक के करोड़ों विद्यार्थी जहां सुचारू शिक्षण मिल रहा है, वहीं पर उनकी सामान्य फिटनेस के लिए जो थोड़े बहुत कार्यक्रम थे वो भी नहीं हो पा रहे हैं। पांच से लेकर सोलह वर्ष तक के बच्चों व किशोरों को जहां सुचारू फिटनेस कार्यक्रम की बहुत ज्यादा जरूरत होती है, वहीं पर हर उम्र के लिए भी फिटनेस कार्यक्रम की जरूरत है। आज जब घर पर बच्चा नियमित न तो कोई घरेलू काम कर रहा है और न ही शिक्षा संस्थान के पास फिटनेस का भी कोई कार्यक्रम है, ऐसे में हमें पहले मानव के वृद्धि व विकास की प्रक्रिया को ठीक से समझना होगा और फिर एक संतुलित फिटनेस कार्यक्रम लागू करना होगा। इस सबके लिए अधिभावकों का जागरूक होना जरूरी है। इस कॉलम के माध्यम से बार-बार इस विषय पर लिखा जा चुका है। खेल व शारीरिक क्रियाओं का जिक्र होते ही आम जनमानस की यह धारणा होती है कि खिलाड़ियों की बात हो रही है, मगर वास्तव में हर नागरिक को यदि उम्रभर स्वस्थ व खुशहाल रहना है तो फिटनेस कार्यक्रम बहुत ही जरूरी है। खेल प्रशिक्षक व शारीरिक शिक्षक को यह ज्ञान जहां बहुत ही जरूरी है वहीं पर हर अधिभावक को भी मानव वृद्धि व विकास के सिद्धांतों को समझना अनिवार्य हो जाता है। संसार के विकसित देशों ने विज्ञान, प्रौद्योगिकी, चिकित्सा पद्धति व मनोरंजन के क्षेत्र में बहुत ज्यादा प्रगति कर ली है और

इन्हें बहतर बनाना कलाएं
निरंतर प्रयास हो रहे हैं। आज कौन देश कितना हर क्षेत्र में आगे है
इस बात का पता ओलंपिक में जीते हुए पदकों से चलता है जहाँ
विकसित देश ही अधिक पदक विजेता होते हैं। विकसित देशों ने
विज्ञान, प्रौद्योगिकी व चिकित्सा के साथ साथ खेल क्षेत्र में काफ़ी
प्रगति की है। मानव की वृद्धि व विकास जानने के लिए उसके जन्म
से लेकर अंत तक विभिन्न अवस्थाओं का अध्ययन बहुत जरूरी है
जन्म के पहले तीन महीनों तक शिशु बिल्कुल लाचार होता है, वह
स्वयं हिल-ड्झल भी नहीं सकता है, फिर वह पलटना सीखता है
आठवें व नौवें महीनों तक वह सहायता से खड़ा होना और चलना
सीखता है। शिशु अपने दूसरे व तीसरे वर्ष में चलना, दौड़ना, कूदना,
चढ़ना, खेंचना, धक्का देना व फैकना का काफ़ी धीमी गति से
प्रारंभिक स्तर सीख लेता है। यही समय है जब बच्चा बोलना व भाषण
को समझने लगता है। बचपन के पहले चार से सात सालों में बच्चों में
शारीरिक क्रियाओं को करने की प्रबल इच्छा होती है। साथी बच्चों के
साथ सहभागिता सीखता है। पहले सिखी गई क्रियाओं में और सुधारों
आता है, इसके अतिरिक्त कैचिंग, हापिंग व रिकर्पिंग आदि
कोआईडेनेशन वाली क्रियाओं को भी करने लग जाता है। बहुत संघर्ष
शारीरिक क्रियाओं को करने की शुरुआत इस आयु से हो जाती है
जिम्मास्टिक व तैराकी जैसे खेलों का प्रशिक्षण इस उम्र से शुरू हो
जाता है। इस अवस्था में बच्चे की सही शारीरिक संरचना व शारीरिक
क्षमताओं को विकसित करते हुए सर्वांगीण विकास का ध्यान रखना
जरूरी है। बचपन के मध्य थाग जो सात से दस साल तक चलता है
इस समय बच्चे का शारीरिक व मानसिक विकास समान रूप से हो
रहा होता है। समाज में क्या घटित हो रहा है उसे बच्चा बहुत तेजी से
सीखता है। इसलिए बच्चे को अच्छा स्कूल चाहिए होता है जो उसके
शारीरिक व मानसिक विकास को सही गति दे सके। बच्चे की इस
अवस्था में स्ट्रैथ व स्पीड का विकास तेजी से होता है। बुनियादी

चंद्रयान-3 से चांद पर उतरने वाला चौथा
देश बन जाएगा भारत : जितेंद्र सिंह

चलते चलते एक नज़र

सेन्ट्रल मुहर्झन कमिटी का निर्णय निकाला
जायेगा मुहर्झन का जुलूस



रांची(प्रभात मंत्र संवाददाता) : सेन्ट्रल मुहर्झन कमिटी के तत्वाधान में सेन्ट्रल मुहर्झन कमिटी के अध्यक्ष जावेद गढ़ी की अध्यक्षता में एक आवश्यक बैठक सम्पन्न हुई। जिसमें आगामी मुहर्झन वर्ष 2023 के मुहर्झन का जुलूस पूरे अस्था एवं आपसी सौभाग्य के साथ संयुक्त रूप से निकाले जाने का निर्णय लिया गया। बैठक में तीनों प्रधान अध्यक्ष जिसमें धर्मात्मा अख्यादा, इमानबख्ता अख्यादा, लीलू अली अख्यादा के प्रमुख खलीफा, उन खलीफा एवं सम्मानित पदाधिकारियों के साथ साथ तीनों अख्यादों के ऊपर लगा रहा है, तो उसका फोन एनजीओ के पास जाता है। ऐसी परिस्थिति में यह गहमगङ्गा होती है कि एफआईआर कहा है। नई व्यवस्था से बच्चे या बच्ची का फोन कॉल सोशा स्टानीय प्रश्नासन के पास पहुंचेगा। उसे जल्द मदद मिलेगी। केंद्रीय मंत्री सृजन इंडिया ने इस वर्ष 2023 के मुहर्झन के जुलूस के एकत्रित एवं आपसी सौभाग्य बैठक में मुख्य रूप से आगे पिए। बैठक में यह भी निर्णय लिया गया कि इस वर्ष 2023 के मुहर्झन के जुलूस के एकत्रित एवं आपसी सौभाग्य बैठक में जुलूस एवं समय की पार्टी अति आवश्यक होगी। इस मौके पर अख्यादों से जुड़े पदाधिकारियों ने विस्ता लिया।

सामूहिक वृक्षारोपण किया गया : अंतु तिर्का

रांची(प्रभात मंत्र संवाददाता) : तेतर तोली सराना सिविति के द्वारा सराना टाई में सिलिति के संवादक अंतु तिर्का के नेतृत्व में सामूहिक वृक्षारोपण किया गया। जिसमें स्कूलुआ (साला), कट्टम, कट्टल, जग्मुन, कर्जंग, गुलबोलर सहित अन्य तिर्का के लगाना 300 पौजी लगाना गए। पांचों को गाय, गोस, गवरी या अन्य जग्नारों से बालों के लिए गेहूंबाल से धूप एवं धूप जावेद गये। अंतु तिर्का ने कहा द्वालोग प्रकृति पूजा कहा है और प्राप्ति पूजा करने के नाते डॉग फैड लगाते हैं। उसे बताते हैं, सरावन करते हैं, हम ऐसे की पूजा करते हैं वो याहे सराहुल मराहुल हो या करना पूजा हो या अन्य कोई पूजा एवं त्योहार हो। इस वृक्षारोपण कार्यक्रम में मुख्य रूप से अंतु तिर्का, वृक्षीय मुद्रा, गायी तुंडा, अख्याद, कर्जंग, गवरी तुंडा, गोस, तिर्का जग्नान भूत्युक्त, कर्तिक तिर्का, खंडु तिर्का, वीणा टोपो, बाल, दीपकणा, सुनीता कर्जंग, सूर्या, विगल कर्जंग, अंगू, अनीश, सुनीता तिर्का, आनंद, बालेश्वर, अन्य, सुषमा, संया, नदिता जग्नान, अंगू, लाली सहित दर्जनों लोग शामिल थे।

हाउन ने मार्यादी की थाना में की शिकायत

रांची(प्रभात मंत्र संवाददाता) : लोअर बाजार थाना द्वारा के बर्बाद थाकूर दिवान के द्वारा में छोट लगी है। लोअर बाजार थाना में नाली सकान लाहौन अंसार है, उसने बताया कि वह गर्मारों का रहने वाला है। वह मर्गीनी के कार्ट में शारीर कर्कला थाकूर आया हुआ था, इनी दौदान करियन अंसारी ने उनके साथ किसी बात को लेकर गाली गलाज किया, मार्यादी की ओर उसके गले से सोने की धौन लीन ली। वही रांची के सदर अध्यात्मा में अपना इलाज नी रखाया है। मामले को लेकर पुलिस अनबीन कर रही है।

भारी बारिश के चलते 10 तथा 11 जुलाई को बंद रहेंगे स्कूल व महाविद्यालय

एजेंसी

शिमला : प्रदेश में बिल्ले चौबीस घंटे से भारी बारिश हो रही है, जिसके चलते जनजीवन बुरी तरह प्रभावित हुआ है। अधिकारी नदियों में बाढ़ आई है और कई स्थानों पर सड़क मार्ग बंद हो गए हैं। भारी बारिश से शासन ने 10 तथा 11 जुलाई को सभी स्कूल कालेज बंद रखने की घोषणा की है। मुख्यमंत्री ने शिमला जिले की कुमारसैन तहसील में भूखलन की घटाना में एक ही परिवार के तीन लोगों की मौत पर शोक व्यक्त किया है।

रविवार को मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सुखवू ने जाताया कि भारी बारिश वर्षा तथा विषम प्रदेश सरकार ने राज्य शिक्षा बोर्ड से संबंद्ध संचालित निजी स्कूल परिक्षा स्थानीय मौसमी परिस्थितियों के द्वायात्रा हिमाचल के प्रदेशीपर्सन्सी के द्वायात्रा विष्विद्यालय से एक ही परिवार के तीन लोगों की मौत पर गहरा शोक व्यक्त किया है। अपने शोक संदेश में मुख्यमंत्री ने

संबंद्ध सरकारी व निजी महाविद्यालय 10 तथा 11 जुलाई को बंद रहेंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश में केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएससी), भारतीय माध्यमिक शिक्षा प्रमाणपत्र (आईसीएसई) तथा अन्य शिक्षा बोर्ड से संबंद्ध संचालित निजी स्कूल परिक्षा स्थानीय मौसमी परिस्थितियों के आधार पर इन दो तथा सरदार पटेल विश्विद्यालय से

अपने स्तर पर ले सकते हैं। इसके साथ ही परमार्थ दिवा गया है कि उपरोक्त शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों तथा कर्मचारियों की सुरक्षा हर स्तर पर सुनिश्चित की जाए। ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुखवू ने शिमला जिले की कुमारसैन तहसील में भूखलन की घटाना में एक ही परिवार के तीन लोगों की मौत पर गहरा शोक व्यक्त किया है। अपने शोक संदेश में मुख्यमंत्री ने

परमार्थ दिवा गया है कि उपरोक्त शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों तथा कर्मचारियों की सुरक्षा हर स्तर पर सुनिश्चित की जाए। ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुखवू ने शिमला जिले की कुमारसैन तहसील में भूखलन की घटाना में एक ही परिवार के तीन लोगों की मौत पर गहरा शोक व्यक्त किया है।

परमार्थ दिवा गया है कि उपरोक्त शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों तथा कर्मचारियों की सुरक्षा हर स्तर पर सुनिश्चित की जाए। ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुखवू ने शिमला जिले की कुमारसैन तहसील में भूखलन की घटाना में एक ही परिवार के तीन लोगों की मौत पर गहरा शोक व्यक्त किया है।

परमार्थ दिवा गया है कि उपरोक्त शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों तथा कर्मचारियों की सुरक्षा हर स्तर पर सुनिश्चित की जाए। ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुखवू ने शिमला जिले की कुमारसैन तहसील में भूखलन की घटाना में एक ही परिवार के तीन लोगों की मौत पर गहरा शोक व्यक्त किया है।

परमार्थ दिवा गया है कि उपरोक्त शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों तथा कर्मचारियों की सुरक्षा हर स्तर पर सुनिश्चित की जाए। ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुखवू ने शिमला जिले की कुमारसैन तहसील में भूखलन की घटाना में एक ही परिवार के तीन लोगों की मौत पर गहरा शोक व्यक्त किया है।

परमार्थ दिवा गया है कि उपरोक्त शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों तथा कर्मचारियों की सुरक्षा हर स्तर पर सुनिश्चित की जाए। ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुखवू ने शिमला जिले की कुमारसैन तहसील में भूखलन की घटाना में एक ही परिवार के तीन लोगों की मौत पर गहरा शोक व्यक्त किया है।

परमार्थ दिवा गया है कि उपरोक्त शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों तथा कर्मचारियों की सुरक्षा हर स्तर पर सुनिश्चित की जाए। ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुखवू ने शिमला जिले की कुमारसैन तहसील में भूखलन की घटाना में एक ही परिवार के तीन लोगों की मौत पर गहरा शोक व्यक्त किया है।

परमार्थ दिवा गया है कि उपरोक्त शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों तथा कर्मचारियों की सुरक्षा हर स्तर पर सुनिश्चित की जाए। ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुखवू ने शिमला जिले की कुमारसैन तहसील में भूखलन की घटाना में एक ही परिवार के तीन लोगों की मौत पर गहरा शोक व्यक्त किया है।

परमार्थ दिवा गया है कि उपरोक्त शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों तथा कर्मचारियों की सुरक्षा हर स्तर पर सुनिश्चित की जाए। ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुखवू ने शिमला जिले की कुमारसैन तहसील में भूखलन की घटाना में एक ही परिवार के तीन लोगों की मौत पर गहरा शोक व्यक्त किया है।

परमार्थ दिवा गया है कि उपरोक्त शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों तथा कर्मचारियों की सुरक्षा हर स्तर पर सुनिश्चित की जाए। ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुखवू ने शिमला जिले की कुमारसैन तहसील में भूखलन की घटाना में एक ही परिवार के तीन लोगों की मौत पर गहरा शोक व्यक्त किया है।

परमार्थ दिवा गया है कि उपरोक्त शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों तथा कर्मचारियों की सुरक्षा हर स्तर पर सुनिश्चित की जाए। ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुखवू ने शिमला जिले की कुमारसैन तहसील में भूखलन की घटाना में एक ही परिवार के तीन लोगों की मौत पर गहरा शोक व्यक्त किया है।

परमार्थ दिवा गया है कि उपरोक्त शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों तथा कर्मचारियों की सुरक्षा हर स्तर पर सुनिश्चित की जाए। ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुखवू ने शिमला जिले की कुमारसैन तहसील में भूखलन की घटाना में एक ही परिवार के तीन लोगों की मौत पर गहरा शोक व्यक्त किया है।

परमार्थ दिवा गया है कि उपरोक्त शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों तथा कर्मचारियों की सुरक्षा हर स्तर पर सुनिश्चित की जाए। ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुखवू ने शिमला जिले की कुमारसैन तहसील में भूखलन की घटाना में एक ही परिवार के तीन लोगों की मौत पर गहरा शोक व